अक्षरब्रह्मयोग

(भगवत्प्राप्ति)

अर्जुन उवाच।
किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते।।१।।

अर्जुनः उवाच=अर्जुन ने कहा; **किम्**=क्या है; **तत्**=वह; **ब्रह्म**=ब्रह्म; **किम्**=क्या है; **अध्यात्मम्**=आत्मतत्त्व; **किम्**=क्या है; **कर्म**=कर्म; **पुरुषोत्तम**=हे परम पुरुष; **अधिभूतम्**=प्राकृत सृष्टि; **च**=तथा; **किम्**=क्या; **प्रोक्तम्**=कही जाती है; **अधिदैवम्**=अधिदैव; **किम्**=क्या; **उच्यते**=कहा जाता है।

अनुवाद

अर्जुन ने जिज्ञासा की, हे देव! हे पुरुषोत्तम! ब्रह्म क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म का क्या स्वरूप है? यह भौतिक सृष्टि क्या है? तथा अधिदैव क्या है? कृपया कहिये।।१।।

तात्पर्य

इस अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन के **किं तद्ब्रह्म**? आदि प्रश्नों का समाधान किया है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कर्म, भक्ति, योगविधि और विशुद्ध भक्तियोग का भी वर्णन किया है। श्रीमद्भागवत के अनुसार परतत्त्व को ब्रह्म, परमात्मा एवं भगवान्—इन तीन रूपों में जाना जाता है। इसके अतिरिक्त, जीवात्मा